नवोन्वेषी कृषकों की सफलता की कहानी

नवाचार का सारांश
फसलों में जैविक पद्धति अपनाना।
जिन क्षेत्रों में ध्यान केन्द्रित किया गया है
अ. धान, गेहूँ, चना व सब्जियों की जैविक खेती।
ब. वर्मीकम्पोस्ट का निर्माण व प्रयोग
स. जीवामृत का निर्माण व प्रयोग

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री देवनाथ देवांगन पिता श्री कार्तिक राम देवांगन
अनुभव	अ. खेती का अनुभव 12 वर्ष ब. जैविक खेती का अनुभव 2 वर्ष
कुल बिक्री	लगभग 2.5 लाख रूपये आय/वर्ष।
कार्यक्षेत्र	बिलासपुर (छ.ग.)।
विस्तार	5 एकड़ खेती में।
कर्मचारियों की संख्या	–
सम्पर्क विवरण	ग्राम गोबंद, ग्राम पंचायत खरगहना, विकास खण्ड तखतपुर, जिला बिलासपुर (छ.ग.) मोबाईल नम्बर 9098727759.

बिजनेस मॉडल
ग्राम के किसानों को अपने घर पर वर्मीकम्पोस्ट व जीवामृत तैयार करने की जानकारी देते है तथा तैयार वर्मीकम्पोस्ट किसानों को निःशुल्क प्रयोग करने के लिए देते है। साथ ही लोगों को केचुआ प्रदान करते है।

नवाचार का विवरण
नवन्वेषी तकनीकी के अनुसार श्री देवनाथ देवांगन ने अपने खेतों पर केचुआ खाद का प्रयोग कर गेहूँ व चना फसल की खेती प्रारंभ की है। फसल से प्राप्त उपज को जैविक अनाज के रूप में विक्रय कर अच्छी आय अर्जित कर रहें है। वर्ष 2012-13 में किसान ने अपने खेत में वर्मीकम्पोस्ट के साथ जीवामृत का प्रयोग किया जिससे आलू के कंद लगभग 50-250 ग्राम तक प्राप्त हुये। साथ ही जमीन भुरभुरी हुई, फसल में कीट–व्याधि नहीं लगे। आलू के बाद किसान द्वारा उसी भूमि में बरबट्टी की फसल लगाई गई, जिसमें कोई खाद नहीं दी गई है। किसान ने बताया कि पूर्व में गर्मी के मौसम में फसल को 7-8 दिन के अंतराल में सिंचाई की आवश्यकता होती थी, जबकि वर्तमान में फसल को 20-25 दिन के अंतराल में सिंचाई की आवश्यकता होती है। किसान ने बताया कि जीवामृत का प्रयोग करने से गेहूँ में तनाछेदक 2-3 % लगा एवं मक्का फसल के भूट्टे में दानों की मात्रा पूर्णतः भरी थी। फसल में मात्र 1 बार जीवामृत का प्रयोग किया गया था।

नवाचार तकनीकी का असर
जीवामृत के मात्र 1 बार प्रयोग से मिटटी भुरभुरी एवं भूमि की जलधारण क्षमता में वृद्धि हुई। गाँव के ही किसान रामसिंग पिता श्री गोविंद मरकाम ने 5 डिसमील खेती में बरबट्टी फसल लगाकर 15 से 25 दिन के अंतर में 3 बार 10-15 लीटर जीवामृत का प्रयोग किया, जिससे किसान को फसल से 6000 रूपये का शुद्ध लाभ हुआ एवं फसल में कोई भी कीट–व्याधि नहीं लगी।

पहचान/ईनाम

किसान को वर्ष 2012-13 में छत्तीसगढ़ शासन के कृषि मंत्री श्री चंद्रशेखर साहू के करकमलों से आत्मायोजनांतर्गत कृषि विभाग द्वारा उत्कृट कृषक पुरस्कार से सम्मानित किया गया जिसमें किसान को 25,000.00 रूपये की नगद राशि प्रमाणपत्र सहित प्राप्त हुई ।

मुद्दे :

जिन किसान भाईयों के पास एक देशी गाय है लगभग 2½ से 3 एकड़ भूमि की खेती के लिए गाय के गोमूत्र, गोबर, दही एवं उपलब्ध स्थानीय संसाधनों से फसलों के बीजोपचार हेतु बीजामृत एवं भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने हेतु जीवामृत तैयार कर उपयोग किया जा सकता है। साथ ही गोमूत्र के छिड़काव से फसलों में रस चूसने वाले कीटों का नियंत्रण भी सरलता से किया जा सकता है। इस सस्ती व लोकप्रिय तकनीकी को अपनाकर किसान भाई मानव स्वस्थ्य, मृदा स्वास्थ्य व पर्यावरण की सुरक्षा कर सकते है।

संकलन कर्ता :- डॉ. दिनेश कुमार शर्मा प्रमुख वैज्ञानिक/वि.व.वि.(कृषि प्रसार)
श्रीमती निवेदिता पाठक, कार्यक्रम सहायक (गृह विज्ञान)
इं.गा.कृ.वि., कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (छ.ग.)

कृषक का हस्ताक्षर
(देवनाथ देवांगन)
दिनांक .....

नवाचार का सारांश

यौगिक खेती तकनीकी के माध्यम से फसलों में कीट-व्याधि का नियंत्रण।

जिन क्षेत्रों में ध्यान केन्द्रित किया गया है

30 एकड़ धान व गेहूँ फसल में बीजोत्पादन कार्यक्रम तथा बिना जुताई के 7 एकड़ रकबे में सब्जियों का उत्पादन कार्य करना।

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री रामकुमार सैनी पिता श्री ठाकुर दास
अनुभव	अ. खेती का अनुभव 17-18 वर्ष
	ब. यौगिक खेती का अनुभव 5-6 वर्ष
कार्यक्षेत्र	बिलासपुर (छ.ग.)
कुल बिक्री	15-16 लाख रूपये आय/वर्ष
विस्तार	30 एकड़ खेती में।
कर्मचारियों की संख्या	-
सम्पर्क विवरण	ग्राम पुरैना, विकास खण्ड तखतपुर, जिला बिलासपुर (छ.ग.)
	मोबाईल नम्बर 9406439856

बिजनेस मॉडल

गेहूँ की फसल की 31 लाईन लगाने के बाद 20 फीट की दूरी छोड़कर पुनः गेहूँ की फसल की कतार बुवाई करते है। फसल कटाई के 1 माह पूर्व खेत में 2½ एकड़ में टिंडा, 2 एकड़ में लौकी व 2 एकड़ में कुम्हड़ा की फसल गड्ढ़े तैयार कर लगाते है।

नवाचार का विवरण

नवन्वेषी तकनीकी के अनुसार श्री रामकुमार सैनी अपने खेत में लगभग 5 वर्षों से खरीफ में 30 एकड़ में धान एवं गेहूँ फसलों का बीजोत्पादन कार्यक्रम लेते है। फसलों की कीट-व्याधि से रक्षा करने के लिए कोई भी कीटनाशी का प्रयोग नहीं करते। कृषक ने बताया कि फसलों की कीट-व्याधि से नियंत्रण हेतु सुबह-शाम फसलों में योग का प्रयोग कर फसलों में कीड़े-बिमारी न लगे इस हेतु सकरात्मक सोच के साथ फसलों को साकाश देते है। गेहूँ फसल में बिना जुताई के फसल कटने के 1 माह पूर्व 6-7 एकड़ में सब्जियों की खेती करते आ रहें है।

नवाचार तकनीकी का असर

ग्राम पुरैना के कृषक रोपा पद्धति को देखकर खेती में अपनाने लगे है। इसके साथ ही ग्राम के कृषक सब्जी की भी खेती करने लगे है।

पहचान/ईनाम

माह फरवरी में प्रजापिता, ब्रम्हकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के उस्लापुर, बिलासपरु में जिला स्तरीय पंच-सरपंचों के लिए आयोजित यौगिक खेती सम्मेलन में कृषक द्वारा बतायी गयी यौगिक तकनीकी से फसलों में कीट-व्याधि नियंत्रण की जानकारी से प्रभावति होकर कलेक्टर बिलासपुर, ठाकुर रामसिंह ने उपसंचालक, कृषि श्री चिरंजिव सरकार को निर्देशित किया की कृषक का प्रक्षेत्र एवं फसलों का अवलोकन कर संबंधित तकनीकी के बारे में जिले के किसानों को जागरूक करें।

मुद्दे :

खेती में शाश्वत यौगिक खेती तकनीकी को अपनाकर किसान भाई कम खर्च में फसल उत्पादन प्राप्त करने के साथ ही मानव स्वास्थ्य, मृदा स्वाथ्य एवं पर्यावरण की सुरक्षा कर सकते है।

संकलन कर्ता :- डॉ. दिनेश कुमार शर्मा प्रमुख वैज्ञानिक/वि.व.वि.(कृषि प्रसार)
श्रीमती निवेदिता पाठक, कार्यक्रम सहायक (गृह विज्ञान)
इं.गा.कृवि., कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (छ.ग.)

कृषक का हस्ताक्षर
(राम कुमार सैनी)
दिनांक .....

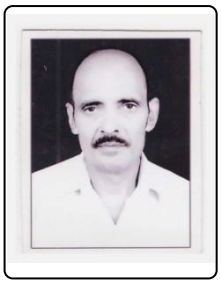

नवाचार का सारांश

खेती में अतिरिक्त आय प्राप्त करने हेतु लाख उत्पादन।

जिन क्षेत्रों में ध्यान केन्द्रित किया गया है

पलाश के पेड़ में लाख उत्पादन ।

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री ध्रुव कुमार तिवारी पिता श्री जिवराखन तिवारी
अनुभव	16 वर्ष लाख की खेती में।
कार्यक्षेत्र	बिलासपुर (छ.ग.)
कुल बिक्री	2,00,000 रूपये आय/वर्ष (लाख उत्पादन)
विस्तार	–कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर एवं भाटापारा, कांसाबेल संस्था मरवाही, जिला बिलासपुर एवं पाली ब्लाक जिला कोरबा (छ.ग.)
कर्मचारियों की संख्या	–
सम्पर्क विवरण	ग्राम लछनपुर, पो. गोंदईया, विकास खण्ड बिल्हा, जिला बिलासपुर (छ.ग.) मोबाईल नम्बर 9754936594

बिजनेस मॉडल

छत्तीसगढ़ राज्य के किसानों के खेतों की मेढ़ में पलाश के पेड़ अधिक मात्रा में पाये जाते है। यदि किसान भाई पेड़-पौधों की अच्छी तरह समय पर छटाई कर 25-30 पेड़ में लाख का उत्पादन ले तो, उससे लगभग 1 एकड़ धान के बराबर आय प्राप्त की जा सकती है।

नवाचार का विवरण

नवन्वेषी तकनीकी के अनुसार श्री ध्रुव कुमार तिवारी ने वर्ष 1996-97 में अपने खेत की मेढ़ पर 103 पलाश के पेड़ में लाख उत्पादन कार्य प्रारंभ किया। किसान को वर्ष 1995-96 में लाख उत्पादन केन्द्र नामकुंज रांची के वैज्ञानिक द्वारा लाख उत्पादन तकनीकी का ज्ञान एवं प्रशिक्षण दिया गया था। इससे प्रभावति होकर किसान द्वारा लाख उत्पादन का विस्तार किया गया। साथ ही जिले के वन विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर एवं भाटापारा एवं पाली ब्लाक जिला कोरबा तक किसानों को लाख का बीज प्रदान कर, प्रशिक्षित किया गया। वर्तमान में किसान द्वारा 1000 पलाश के पेड़ों में लाख उत्पादन किया जा रहा है। तथा क्षेत्र के किसानो को इसकी जानकारी प्रदान की जा रही है। आज किसान 190 रूपये/किलो लाख की बिक्री घर बैठे करता है। लाख बिक्री में कोई परेशानी नहीं आती।

नवाचार तकनीकी का असर

किसान द्वारा वर्ष 1996-97 में 103 पेड़ों से लाख उत्पादन प्रारंभ किया गया वर्तमान में 1000 पलाश के पेड़ों से लाख उत्पादन प्राप्त किया जा रहा है। ग्राम के लगभग 35-40 किसान उत्पादन प्राप्त कर फसल से अतिरिक्त आय की प्राप्ति कर रहें है। इसके साथ ही गोंदईया, लोफंदी, अमतरा, पेण्डरवा, चुम्कवाँ एवं रानीगांव के किसान लाख उत्पादन करते है।

पहचान/ईनाम

किसान को वर्ष 2001 में लाख उत्पादन के लिए स्व. चौधरी चरण सिंग के जन्म दिवस समारोह में पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री अजीत सिंग के करकमलों से लाख उत्पादन केन्द्र नामकुज रांची (बिहार)से पुरस्कार प्राप्त हुआ है। किसान वर्तमान में आदर्श वन ग्राम समिति लछनपुर के अध्यक्ष है और आपके द्वारा अभी तक लगभग 50,000 किसानों को प्रशिक्षित किया गया है।।

मुद्दे :

छत्तीसगढ़ राज्य के किसानों के खेतों की मेढ़ में अधिक संख्या में पलाश के पेड़ पाये जाते है। श्री तिवारी जी का अनुभव है कि पलाश के पेड़ से ज्यादा लाख प्राप्त होता है। अतः किसानों को इसके उत्पादन तकनीकी का ज्ञान व प्रशिक्षण किसानों को प्रदान किया जाये, तो छ.ग. राज्य के किसानों को इससे कम लागत में अतिरिक्त आय खेती से प्राप्त होगी। क्योंकि लाख की बिक्री घर बैठे होती है।

संकलन कर्ता :- डॉ. दिनेश कुमार शर्मा प्रमुख वैज्ञानिक/वि.व.वि.(कृषि प्रसार)
श्रीमती निवेदिता पाठक, कार्यक्रम सहायक (गृह विज्ञान)
इं.गा.कृवि., कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (छ.ग.)

कृषक का हस्ताक्षर
(ध्रुव कुमार तिवारी)
दिनांक .....

नवाचार का सारांश
वर्षा आधारित धान में श्री पद्धति अपनाना।
जिन क्षेत्रों में ध्यान केन्द्रित किया गया है
धान में श्री पद्धति अपनाना।

नवाचारक का विवरण

नाम	श्री संजय ध्रुर्वे पिता श्री शिवराम
अनुभव	अ. खेती में 7-8 वर्ष
	ब. श्री पद्धति में ६ वर्ष
कुल बिक्री	लगभग 28 से 30,000 रूपये आय/वर्ष
कार्यक्षेत्र	बिलासपुर (छ.ग.)।
विस्तार	5 एकड़ खेती में।
कर्मचारियों की संख्या	–
सम्पर्क विवरण	ग्राम भैंसाझार, विकास खण्ड कोटा, जिला बिलासपुर (छ.ग.)
	मोबाईल नम्बर 9669119897.

बिजनेस मॉडल
असिंचित भूमि में धान में श्री पद्धति अपनाकर परम्परागत तरीके की तुलना में श्री पद्धति अपनाकर किसान भाई फसल से 1½ गुना अधिक उत्पादन प्राप्त कर रहे है।

नवाचार का विवरण
नवन्वेषी तकनीकी के अनुसार श्री संजय ध्रुर्वे ने वर्ष 2007 में ½ एकड़ खेती में धान की किस्म एम.टी.यू 1010 को लगाया। जिससे किसान को 24 क्विंटल उपज प्रति एकड़ प्राप्त हुई। किसान ने बताया कि इस पद्धति में 3 किलो बीज की प्रति एकड़ आवश्यकता होती है। साथ ही 10 दिन के अंतर से फसल में 3 बार वीडर का उपयोग करने से 50% मजदूरी की बचत होती है। किसान द्वारा धान किस्म एम.टी.यू 1010 के बाली की लम्बाई 1 फिट नापी गई है। 1 बाली में लगभग २७५-२८० दाने प्राप्त किये गये है। एक पौधें में 50-52 कंसे पाये गये है।

नवाचार तकनीकी का असर
ग्राम भैंसाझार में पहली बार असिंचित अवस्था में किसान द्वारा वर्ष 2007 में ½ एकड़ खेती में श्री पद्धति से धान की खेती की गई। इस पद्धति द्वारा अधिक फसल उत्पादन होने एवं प्रति एकड़ बीज की मात्रा कम लगने, साथ ही समय, श्रम एवं मजदूरी की बचत होने से प्रभावित होकर, आज ग्राम के लगभग 50% खेती रकबे में धान की खेती श्री पद्धति से की जा रही है।

पहचान/ईनाम
कृषक क्लब के अध्यक्ष श्री संजय धुर्वे द्वारा अपनाई गई धान में श्री पद्धति से अधिक उत्पादन प्राप्त होने के कारण ग्राम के किसान, कृषक को इस पद्धति के लिए अपना मार्गदर्शक मानते है।

मुद्दे :

धान में श्री पद्धति को अपनाकर किसान भाई छत्तीसगढ़ राज्य में हरित क्रांति को बढ़ाने में अपना योगदान दे सकते है। यह धान की खेती में कम लागत तकनीक सिद्ध हुई है।

संकलन कर्ता :- डॉ. दिनेश कुमार शर्मा प्रमुख वैज्ञानिक/वि.व.वि.(कृषि प्रसार)
श्रीमती निवेदिता पाठक, कार्यक्रम सहायक (गृह विज्ञान)
इं.गा.कृवि., कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (छ.ग.)

कृषक का हस्ताक्षर
(संजय ध्रुर्वे)
दिनांक .....